ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 284-286
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

वर्तमान संदर्भ में अनुवाद एवं सूचना प्रौद्योगिकी की उपयोगिता

डॉ0 वंदना पाण्डेय
एसोसिएट प्रोफेसर हिन्दी विभाग, गोकुलदास हिंदू गर्ल्स कॉलेज मुरादाबाद (उ0प्र0), भारत

Received- 07.05.2019, Revised- 12.05.2019, Accepted - 17.05.2019 E-mail: -vandanalok2004@gmail.com

सारांश : *विचारों का आदान प्रदान मनुष्य की सहज आवश्यकता है। इसके लिए भाषा की भूमिका प्रमुख है। जैसे–जैसे मनुष्य की आवश्यकता बढ़ने लगी वैसे–वैसे वह नई जानकारी प्राप्त करने के लिए उत्सुक और प्रयत्नशील रहा। आधुनिक युग सूचना क्रान्ति का युग है। आज प्रौद्योगिकी के माध्यम से बहुत सी सूचनाएं आसानी से प्राप्त कर सकते है। सूचना प्रौद्योगिकी ने हर क्षेत्र की दूरियों को घटा दिया है। इसे अंग्रेजी में ''इन्फरमेशन टेक्ननेलजी'' या आई.टी. कहा जाता है। सूचना प्रौद्योगिकी में वैज्ञानिक रीति से सूचना का उपयोग किया जाता है। इसमें विभिन्न साधनों के माध्यमों से सूचना का आदान–प्रदान दूर स्थानों तक बहुत जल्दी किया जाता है। अर्थात् सूचना का प्रसारण करने के लिए जिस प्रौद्योगिकी का उपयोग किया जाता है वही सूचना प्रौद्योगिकी है।*

कुंजीभूत शब्द– प्रयत्नशील, आधुनिक युग, क्रान्ति का युग, प्रौद्योगिकी, इन्फरमेशन टेक्ननेलजी, प्रसारण।

सूचना के आदान–प्रदानके लिए भाषा की अहम भूमिका रही है। ज्ञान–विज्ञान के विस्तार के साथ बहु भाषा–भाषी लोग आपस में मेल–मिलाप कर रहे है। भूमण्डलीकरण के इस दौर में विश्वग्राम की अवधारणा साकार हो रही है। इसमें प्रौद्योगिकी का बहुत सहयोग रहा है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी में भिन्नता है। "यदि बिजली के उत्पादन का सिद्धान्त विज्ञान का विषय है तो बिजली की शक्ति से चलित मशीनों का उत्पादन प्रौद्योगिकी है।"1 वास्तव में यह मनुष्य के व्यवहारिक ज्ञान का परिचायक है। आज हम अपने दैनिक जीवन के हर क्षेत्र में प्रौद्योगिकी का उपयोग कर रहे है। यह हर रोज नये नये रूपों में हमें लुभा रही है। प्रौद्योगिकी का एक मुख्य रूप है– सूचना प्रौद्योगिकी। इसके माध्यम से हर देश तरक्की प्राप्त करना चाहता है। देश–विदेश से संपर्क स्थापित करते हुए ही हम आगे बढ सकते है। अतः अन्य भाषा को समझने के लिए अनुवाद की आवश्यकता होती है।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास के साथ अनुवाद रूप में भी परिवर्तन हुआ है। पश्चिमी देशों ने बहुत पहले ही अनुवाद के व्यावसायिक महत्व को समझ लिया था, लेकिन हम भारतीय हमेशा भाषा को पूजते रहे। हम उसके साँस्कृतिक पक्ष से अधिक जुड़े रहे। लेकिन आज विकास के दौर में हमने भी अनुवाद के महत्व को समझ लिया है। सरकारी और गैर–सरकारी स्तर पर इस दिशा में सराहनीय प्रयास किये जा रहे है। भारत सरकार ने सूचना प्रौद्योगिकी मन्त्रालय का गठन किया। भारत को सूचना प्रौद्योगिकी की महाशक्ति बनाना इस मन्त्रालय का लक्ष्य है। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर ने हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद परियोजना चलाई। भारत में मशीनी अनुवाद का प्रारम्भ 1980 ई. के. आस पास शुरु हुआ। भाषा संस्थान और सूचना प्रौद्योगिकी मन्त्रालय ने मशीनी अनुवाद के लिए कई परियोजनाएँ बनाई। 1990 ई. में भारतीय प्रौद्योगिकी, कानपुर ने "ऑग्ल भारती" और "अनु भारती" प्रविधि के आधार पर मशीनी अनुवाद विकसित करने का प्रयास किया और इसी का विकसित रूप इन्टरनेट पर दिया गया। लेकिन यह तन्त्र केवल सरल वाक्यों के अनुवाद तक सीमित रहा। "नेशनल सेन्टर फॉर सोफ्टवेयर टेक्नोलॉजी मुम्बई ने 1995" "मात्रा" नमक परियोजना अंग्रेजी समाचार और कथाओं के हिन्दी अनुवाद के लिए बनाई। भारत सरकार की कार्यालयी आवश्यकताओं के लिए सी., डेक, पूणे, ने "मन्त्रा" नामक अनुवाद तन्त्र विकसित किया। अन्तर्राष्ट्रीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान, हैदराबाद ने अंग्रेजी–हिन्दी अनुवाद तन्त्र "शिव और शक्ति" विकसित किया। अनुवाद कला के विकास के साथ–सा परिभाषिक शब्दावली की भी आवश्यकता हुई। पारिभाषिक शब्दावली के लिए कोश निर्माण का कार्य केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, केन्द्रीय हिन्दी निर्देशालय दिल्ली, केन्द्रीय हिन्दी साहित्य अकादमी और भाषा संस्थानों ने किया। मशीनी अनुवाद को आज "वेब" अनुवाद के लिए गूगल, याहू, रेडिक लिए हाटमेल की सुविधा प्राप्त रूप में विकसित होने का अवसर मिला है।

तकनीकी कम्यूटरी हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के विकास एवं अनुवाद के लिए सी. डेक.पूणे ने "आई लीप" और "लीप ऑफिस" बनाया। यह भारतीय भाषाओं का शब्द संसाधन करता है। इसमें अंग्रेजी के अलावा बारह भारतीय भाषाओं में टंकण की सुविधा प्राप्त है। "इन्स्क्रिप्ट" की सहायता से भाषा बदलकर टंकण किया जा सकता है। अनुवाद को के रूप में इसमें प्रशासनिक कोश और बैंकिंग कोश उपलब्ध है। यह अनुवाद काम आसान बना देता है। सी.डेक.पुणे ने "लीला हिन्दी" और "गुरु" भी बनाया। हिन्दी सीखनेवालों के लिए यह बनाया गया है।

संचार माध्यम के विकास ने भाषा के स्तर पर

अनुवाद को बहुत आगे बढ़ाने का कार्य किया है। भारत बहुभाषी देश है। देश की हलचल की जानकारी हेतु उसका अनुवाद भी आवश्यक हो जाता है। डॉ पूरनचन्द टंडन जो का कहना है कि – "बहु भाषी, बहु धार्मिक, बहु साँस्कृतिक पृष्ठभूमि के कारण भारत में सामान्यतः प्रत्येक मनुष्य जन्मजात – अनुवादक है। (वास्तव में 1980 ई. से 1990 ई तक का दशक संचार का दशक था तो 1990 से 2000 तक का दशक सुचना क्रान्ति का दशक या और 2000 से 2010 ई. तक का दशक "कन्वर्जेन्स" दशक है। "कन्वर्जेन्स" का अर्थ है सभी स्तरों पर परिवर्तन। अर्थात् "कन्वर्जन्स" ऐसे डिजिटल नेटवर्क का निर्माण करता है। जिसके द्वारा उपभोक्ता की बहुत सी आवश्यकताओं जैसे फोन, फिल्म, संगीत, टोलिविजन, मनोरंजन आदि की पूर्ति एक ही स्त्रोत से की जा सकती है। "मोबाइल" इसका सबसे अच्छा उदाहरण है।

प्रौद्योगिकी के विकास से संचार माध्यम की अहम भूमिका रही है। संचार माध्यम के दो रूप है। पहला–मुद्‌ण माध्यम और दूसरा प्रसारण माध्यम। मुद्रण माध्यम से हम बहुत पहले परिचित है। इसमें भाषा प्रयोग के विभिन्न आयाम है। मुद्रण संचार के क्षेत्र में रोज समाचारों, विज्ञापन एवं रचनाओं के अनुवाद का क्रम चलता रहता है। साहित्यक तथा साहित्येत्तर विषयों से सम्बन्धित कितनी ही रचनाओं के अनुवाद विभिन्न भाषाओं में हो चुका है। मलयालम को बहुत से सामग्रियों का अनुवाद हिन्दी और अन्य भाषाओं में हुआ है। मलयालम लेखक एम. मुकुन्दन का मलयालम उपत्यक "देवत्तिन्टे विकृतिकल" को 1992 ई, में साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला था। साहित्य अकादमी के लिए इस उपन्यास का हिन्दी अनुवाद श्री मोहनन वी.टी.वी. ने "ईश्वर की शरारतें" नाम से किया। समाचारों के अनुवाद में अन्य भाषा रिपोर्टों का अनुवाद किया जाता है। संवाद समितियों द्वारा यह कार्य सम्पादित किया जाता है।

प्रसारण माध्यम को दो वर्गों में रखा जा सकता है। पहला–श्रव्य प्रसारण और दूसरा दृश्य–श्रव्य प्रसारण रेडियो, टेलिफोन आदि श्रव्य प्रसारण के उदाहरण है। अनूदित सामग्री का श्रव्य प्रसारण करते समय भाषा की ध्वन्यात्मकता पर अधिक ध्यान देना आवश्यक हो जाता है। अनुवाद इस प्रकार से किया जाना चाहिए जिसे श्रोता आसानी से समझ सके व अपनापन महसूस कर सके। भाषा में कृत्रिमता का आभास नहीं होना चाहिए। श्रीनारायण समीर के अनुसार – "भाषा यदि अभिव्यक्ति का माध्यम है तो अनुवाद अभिव्यक्ति को सुगम बनाने का उपाय है।

दृश्य–श्रव्य संचार माध्यम में अनूदित सामग्री की भाषा की ध्वन्यात्मकता और दृश्यात्मकता दोनों पर ध्यान देना आवश्यक है। दृश्य–श्रव्य संचार माध्यम में दूरदर्शन, फिल्म, ई.मेल, इंटरनेट आदि आते है। हम देखते है कि दूरदर्शन पर विज्ञापन का एक ही दृश्य होता है लेकिन अलग–अलग भाषाओं में उसका ध्वन्यान्तरण या डब्बिंग किया जाता है। एक ही फिल्म कभी–कभी कई भाषाओं में प्रसारित की जाती है।

इसके लिए दो तीन तरीके अपनाये जाते है। पहला तरीका है सबटाइटिलिंग या उपशीर्षक देना।

जैसे नेशनल चौनल पर यदि मलयालम फिल्म का संम्प्रेषण हो रहा हो तो अंग्रेजी में उसका सबटाइटिल दिया जाता है। दूसरा तरीका ध्वन्यान्तरण या डब्बिंग का है। जैसे–तमिल फिल्म "यन्दिरन" का कई भाषाओं में डबिंग किया गया था। धारावाहिक 'रामायण' और 'महाभारत' फिल्म 'जुरासिकपार्क' आदि कई ऐसे उदाहरण है। हिन्दी चौनल पर प्रसारित होनेवाला कार्यक्रम या – जस्टडॉस।

जिसे बहुत कम केरलवासी देखते थे, लेकिन जब 'जस्टडॉस' का डबिंग मलयालम में किया गया तो केरल के अधिकांश युवा वर्ग उसे देखने केलिए आकर्षित हुए। इसे अनुवाद का बहुत बडा प्रभाव मान सकते है। तीसरा तरीका है फिल्म का पुननिर्माण करना।

जैसे मलयालम फिल्म 'मणिचित्रताप' का पुननिर्माण हिन्दी में 'भूलभुलैया' और तमिल में 'चन्द्रमुखी' के नाम के किया गया मलयालम की कई फिल्मों का पुननिर्माण हिन्दी में हुआ जैसे क्रथपरयुम्पोल बिल्लु बारबर, तालवट्टम–क्योंकि, वेट्टम तो होना ही था, काक्ककुयिल–गोलमाल, पंजाबी हाउज, चुपके चुपके आदि। इस प्रकार के फिल्म निर्माण में मलयालम के फिल्म निर्देशक प्रियदर्शन का नाम अग्रगण्य है।

फिल्म उद्योग ने अनुवाद के क्षेत्र में सराहनीय कार्य किया है। इस प्रकार के अनुवाद से दृश्य–श्रव्य माध्यम में व्यापक वृद्धि हुई है। इससे व्यावसायिक स्तर पर इन उद्योगों को काफी फायदा हुआ है। श्रोता और दर्शक ऐसे कार्यक्रमों अधिक रुचि दिखा रहे हैं। ई.मेल. इंटरनेट ब्लोगिंग के माध यम बहु–भाषी लोग बहुत करीब आ गये हैं।

सूचना प्रौद्योगिकी और अनुवाद ने बहु–भाषी लोगों को वैचारिक स्तर पर पास लाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। ने आज भारत के साधारण लोग ई.मेल या इंटरनेट से अधिक नहीं जुड़ पाये हैं। भारत के खास तबके लोग ही इस नई प्रौद्योगिकी से जुड सके । इस नई प्रौद्योगिकी के आम प्रयोग में कुछ और वक्त लगेगा। आज अनुवाद का काम एक व्यवसाय बन गया है।

इस दिशा में व्यक्तिगत संस्थाएं और अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएँ भी काम कर रही है।

संयुक्तराष्ट्र संघ, युरोप और अमेरिका के व्यावसायिक प्रतिष्ठान अनुवाद के क्षेत्र में बहुत आगे बड़ चुके हैं। वे भाषा मूलक उद्योग चला रहे है। वास्तव में सूचना प्रौद्योगिकी के

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

विकास ने अनुवाद की माँग को बहुत बड़ा दिया है। संक्षेप में कह सकते है कि रोजगार के नये अवसरों में अनुवाद आज आशा की एक किरण है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर व्यावहारिक आनुवाद, पृ.सं. 171.
2. डॉ. पूरनचन्द टंडन आनुवाद एवं संचार, पृ.सं. 7.
3. श्रीनारायण समीर आनुवाद और नव्य अवधारणा, आलोचना मार्च, 2009.

*****